Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024

Impact Factor : 7.665

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT

UGC CARE I

बौद्ध महायान परम्परा के साहित्य में पर्यावरण और मानवका अर्न्तसम्बन्धः एक साहित्यिक विश्लेषण

Monu,
Ph.D Research Scholar,
Registration No - 210510271147,
Department of History and Archaeology,
Maharshi Dayanand University, Rohtak
E-mail Id: monuthory@gmail.com

Dr. Amardeep
Assistant Professor,
P.G.Department of History,
Government College, Birohar,
(Jhajjar) Haryana
E-mail Id: amarchsjnu@gmail.com

सारांश
भौतिक प्रकृति, जीवन जगत और पर्यावरण इतना विस्तृत है कि इसको एक पहलू से नहीं समझा जा सकता है। सकारात्मक रूप से कहें तो दुनिया में जो तत्व और ताकते हैं वे हमारे शरीर–मन परिसर में भी मौजूद हैं जो हमें अपने पर्यावरण के साथ समायोजित करने में सक्ष्म बनाते हैं। प्रकृति के सार्वभौमिकों में आध्यात्मिक पहल अनिवार्य रूप से जीवन, मृत्यु और जानने की प्रक्रिया से सम्बंधित है। आज हम प्रकृति से ही तालमेल कर मौसम की भविष्यवाणी, खाद्य, उत्पादन, खान–पान, रहन–सहन, कृषि जैसी जीवन से जुड़ी भौतिक संस्कृति को जान पाए हैं। बौद्ध धर्म, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक के साथ–साथ महायान सूत्रों में पर्यावरण के घटकों पर भी विशेष बल देता है। पर्यावरण चेतना के सन्दर्भ में महायान शाखा द्वारा महात्मा बुद्ध के उपदेशों को प्रदर्शित करना है, जिससे आज के पर्यावरण के महत्व को जाना जा सकता है। नेवार तथा तिब्बती परम्परा के अनुसार मुख्य महायान सूत्र नौ है, जो कि *सन्द्धर्भपुण्डरीक, ललितविस्तार, लंकावतार, सुवर्ण–प्रकाश, गण्डव्यूह, तथागतगुहक, समाधिराज, दशभूमिश्वर एवं अष्टसहस्र प्रज्ञापारमिता* सूत्र इन महायान सूत्रों को वैपुल्य सूत्र भी कहते हैं जिसमें पर्यावरण केविभिन्नआयामोंजिनमें प्रतिबिम्बित द्वीप, पर्वत, यन कन्दरा, नदी, नगरखान–पान, रहन–सहन, जड़ी–बूटियाँ, पेड़–पौधों, महासागरों, क्षेत्रों, विभिन्न वस्त्रों, कमल, दिशाओं, नागों, धातुओं, रत्नों, रंगों, जल के रंगों, ऋतुओं, 15 फूलों,पर्वतों, नदियों, झरनों, वनों, पूजा सामग्री इत्यादि कापर्यावरण का विस्तृत रूप से वर्णन देखने को मिलता है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य बौद्ध धर्म में पर्यावरण तथा महायान शाखा के साहित्य में पर्यावरण को वर्णित करना है।

बीज शब्द – पर्यावरण, घटक, उन्नत, सुगंधित फूल, उपदेश, भूमि, संरक्षण, क्षेत्र, समायोजित, मौसम, उत्पादन, खान–पान, ऋतु।

परिचय :
पृथ्वी के धरातल पर मनुष्य के चारों ओर फैला भौतिक वस्तुओं (स्थल, जल, मृदा, हवा यह रासायनिक तत्व है) का आवरण तथा रासायनिक एव जैविक कारकों की समष्टिगत एक इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा परितंत्रीय आबादी को प्रभावित करती है तथा उनके रूप जीवन और जीविता को तय करते हैं।[1] पर्यावरण के संदर्भ में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सविंद्र सिंह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *'भौतिक भूगोल'* में कहते हैं कि पर्यावरण वह है जो कि प्रत्येक जीवन के साथ जुड़ा हुआ है तथा हमारे चारों तरफ वह हमेशा व्याप्त रहता है। *ऋग्वेद* में पर्यावरण को पांच तत्वों के आधार पर विभाजित किया है जो निम्नलिखित हैं–

भूमिशपोऽनलो वायुण्यौमहिकार एव च।
यस्य रूपं नमस्यामि भवन्तं बूहासंहितम् ।।

यह मंत्र *'ऋग्वेद'* से लिया गया है जिसमें पर्यावरण के लिए भूमि, जल, तेज, वायु, आकाश और अग्नि के प्रतीक रूप में प्राकृतिक तत्वों को समर्पित करता है और इसका अभिप्रेत अर्थ है कि हमें इन प्राकृतिक तत्वों के साथ एकता और संबंध में जीना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण को मानय कर्तव्य बताते हुए *'यजुर्वेद'* में वैदिक ऋषियों ने वृक्ष संरक्षण हेतु मंत्र कहे हैं। यथा–

1सविन्द्र सिंह, भौतिक भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2020, पृ०–1

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
Impact Factor : 7.665
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

वृक्षाणां पतये नमः
वनानां पतये नमः
अरण्यानां पतये नमः
औषधीनां पतये नमः
नमो वन्याय च
नमों वृक्षेभ्यों हरिकेशन्यो, स्वधिते मैनं हिंसीःइत्यादी[2] ।।

पर्यावरण इतिहास लेखन की शुरुआत :

आधुनिक काल में पर्यावरण इतिहास लेखन कार्यक्षेत्र में सर्वप्रथम प्रयास एनाल्स इतिहासकारों जिनमें लुसियन फ्रेबे[3], मार्क बलोच[4], फर्नाड ब्राडेल[5] आदि ने शुरुआत की। पर्यावरण संरक्षण संबंधी इतिहास लेखन में वर्तमान में इंग्लैंड के डॉक्टर रिचर्ड ग्रोव, द्वारा पर्यावरण के संदर्भ में इतिहास शैली की नवीनतम शैली का शनै–शनै विकास हुआ है। भारत में पर्यावरण इतिहास पर लेखन कार्य 1990 के दशक से शुरू हुआ जिसका मुख्यतः शोध आधुनिक भारत के पर्यावरण इतिहास पर आधारित है परन्तु प्राचीन से लेकर आधुनिक कालतक पर्यावरणीय इतिहास के क्षेत्र में भी उन्नत शोधकार्य के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। जिनमें महेशरंगाराजन[6], रंजन चक्रवर्ती, सच्चिदानंद सिन्हा[7], के० श्री धम्मानंद, इयान हैरिस, शिवरामकृष्ण[8] का योगदान अग्रणी है, जो निरंतर इस दिशा में वस्तुनिष्ठ काय करने के लिए अग्रसर है।

पर्यावरण की उपयोगिता तथा इसकी चेतना को व्यक्त करते हुए पर्यावरण मनीषी ए० गाऊण्डी ने अपनी पुस्तक *'द नेचर ऑफ द इन्वायरमेंट'* में पर्यावरण का मानव जीवन में क्या योगदान है, पर्यावरण चेतना का आगामी पीढ़ी के लिए क्या संदेश है. उसकी क्या उपयोगिता है, क्या प्रासांगिकता है यह हमें इतिहास ही बताता है। मानव तथा पर्यावरण का यह संबंध बताते हुए एक और पर्यावरण मनीषी धर्म गैया जी कहते हैं यदि मानव सभ्यता को बचाना है, तो प्रकृति के बीच में रहकर प्रकृति का संरक्षण करना होगा।[9] बौद्ध धर्म में पर्यावरण संरक्षण इतिहास के लिए स्त्रोत सामग्री रूप में लिखित, मौखिक, विज्ञान से जुड़े आंकड़ों के रूप में लंबे समय से मौजूद रही। पर्यावरण को क्रमिक रूप देते हुए इतिहासकार माइकल एच० फिशर *अपनी पुस्तक 'एन इन्वायरमेंटल हिस्ट्री*

2एम० मेहरा, यजुर्वेद मे पर्यावरण दृष्टि एक समीक्षा, प्रज्ञा, पर्यावरण, विशेषांक, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010, पृ०–105

3लुसियन फेबे (1878–1956) फ्रेंच अनाल्स इतिहासकार पर्यावरण चेतना व भौगोलिक क्षेत्र में इनकी पुस्तक 'ए ज्योग्राफिकल इन्ट्रोडक्सन टू हिस्ट्री' प्रमुख है जिसका प्रकाशन 1925 में तथा ला टेरे एट एल एवोल्यूशन हयूमेन इंट्रोडक्शन जियोग्राफिक ऑल हिस्टरिजष् प्रसिद्ध है। जिसका प्रकाशन पेरिस से 1922 में हुआ इसमें प्राकृतिक तथा मनुष्य के बीच संबंध को दर्शाया गया है तथा पर्यावरण की स्थिति को दर्शाया गया है।

4लुसियन फ्रेबे तथा मार्क बलोच दोनों ने मिलकर 'ए जियोग्राफिकल इन्ट्रोडक्सन टू हिस्ट्री', 1925 में पर्यावरण चेतना को गंभीर संरक्षण बताते हुए मानव को भविष्य की संभावित आर्थिक और राजनीतिक आपदाओं से बचाने के लिए दुनिया को पर्यावरण संरक्षण करने तथा बढ़ते प्रदूषण से मानव जीवन को खतरे के बारे में शिक्षित करना था।

5ब्राडेल फर्नाड (1902–85) फ्रांसीसी अनाल्स इतिहासकार इनकी पुस्तक "Mediterranean and the Mediterranean world in the age of Puilip II" पर्यावरणीय इतिहासकार लेखन पर महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसका प्रकाशन 1949 में हुआ। इसमें भौगोलिक सतर परिवर्तन, मानव की घटनाओं व मानव का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृति इतिहास वर्णित है।

6 महेश रंगाराजन, इन्वायरमेंटल इशयूज इन इंडिया, डोलरिंग काइंडरसली (India) pvt- ltd- Noida, 2007 इस पुस्तक में प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक पर्यावरण की भूमिका, मानव का वन में बसना, जंगल साफ कर खेती करना, शहरीकरण का उदय अन्य पर्यावरणीय मुद्दों को बताया गया है।

7कोठा सच्चिदानंद मूर्ति (1924–2011), मनुष्य और प्रकृति समकालीन दर्शन समस्याएं, भारतीय दर्शनिक एवं प्रोफेसर थे। मूर्ति आंध विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर रहे, उन्होंने बौद्ध दर्शन में विशेषता प्राप्त की और महायान बौद्ध धर्म के बड़े पैमाने पर योगदान दिया, नागार्जुन की शिक्षाओं पर (नागार्जुन 1971) व अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ उपलब्ध है।

8महेश रंगाराजन एवं शिवरामकृष्ण, इंडियाज इन्वायरमेटल हिस्ट्री फ्रॉम ऐन्सेंट टू द कोलोनिल पिरीयड़, परमानेंट बलैक, 2012 इसमें प्रागैतिहासिक भारत से लेकर 19वीं सदी के मध्य तक भारत के विभिन्न हिस्सों के पर्यावरणीय संघर्ष तथा संकट को दर्शाया गया है।

9धर्म गैया, ए० हरविष्ट ऑफ ऐसेज इन बुद्धिज्म एण्ड इकालाजी, प्रालेक्स प्रेस, कैलिफोर्निया, युनाइटिड स्टेट अमेरिका, 2001, पृ०110

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
Impact Factor : 7.665
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

ऑफ इण्डिया (फ्राम अर्लियस्ट टाइम्स टू दॉ टवंटी फस्ट संच्यूरी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, (पृ० 58–60)' में पर्यावरण को वर्णित करते हुए कहते हैं कि ईसा पूर्व की अन्तिम पांच शताब्दियों और ईसा पूर्व की पहली आठ शताब्दियों में भारत का भौतिकपरिदृश्य और होलोसीन जलवायु गतिशील रूप से बदलती रही है। बदलते वायुमण्डल से विशाल हिमालय उत्थान और विशाल हिमनदी धीमी हो गई। हालांकि अल्पकालिक बाढ़ और गाद के कारण लम्बे समय चलने से भारत में प्रमुख नदियाँ बड़े पैमाने पर स्थिर हो गई थी।

पर्यावरण के प्रति प्राचीन दृष्टिकोण :

प्राचीन काल से ही प्रकृति के प्रति मानव का व्यवहार विचारणीय रहा है तथा पेड़–पौधों, नदियों, पर्वतों, जानवरों आदि को देवीय रूप माना है। पौधे और जंतु दोनों के जीवन और विकास में पर्यावरण का अनन्त महत्व रहा है। ये पृथ्वी और जल पर्यावरण के संवर्धन में महत्वपूर्ण घटक है अतः इनकी सुरक्षा व संरक्षण के लिए क्या कोई गंभीर प्रयास किया जाता था ऐसी किसी योजना की कोई जानकारी बहुतायात में नहीं हो पाई है। डॉ० पी० अग्रवाल अपनी पुस्तक *'मैन एण्ड इन्वायर्मेंट इन इण्डिया द एजिज'* में बताते हैं कि पर्यावरण के प्रति मानव की चेतना के साक्ष्य प्रागैतिहासिक, आद्यऐतिहासिक काल से ही प्राप्त होने लगते हैं। हड़प्पा, वैदिक लोगों द्वारा वृक्ष पूजा से पता चलता है प्राचीन भारतीय पर्यावरण के प्रति चेतना रखते थे। महाजनपद काल भी पर्यावरण से जुड़ा हुआ मिलता है, जहां कृषि उन्नत अवस्था में थी।[10]

भारत का विशाल साम्राज्य जो मगध के नाम से प्रसिद्ध हुआ उस समय को उचित पर्यावरणीय भौगोलिक स्थिति से जोड़ा जाता है। प्राचीन ग्रंथों में जानवरों की हत्या की निंदा की गई है। प्रसिद्ध इतिहासकार राममशरण शर्मा अपनी पुस्तक *'भारत का प्राचीन इतिहास'* में बताते हैं कि गौतम बुद्ध पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पाली भाषा के ऐतिहासिक ग्रंथ सुतनिपात में गायों की रक्षा की आवश्यकता पर बल दिया।[11] *'संयुक्त निकाय'* में कहा गया है कि हिंसा समाज के लिए घातक है चाहे वह पशु हिंसा हो या मानव हिंसा।[12] इसी संदर्भ में पर्यावरण मनीषी डब्लयू बुल्तजर अपनी पुस्तक *'एनवायरमेंट एन इकोलाजिकल अप्रोच दू प्रीहिस्ट्री'* में बताते हैं कि पौधे तथा पशु मानव को भोजन, जीवन शक्ति, स्वास्थ्य प्रदान करने वाले कारक है इनसे हिंसा नहीं करनी चाहिए।[13]

बौद्ध धर्म में पर्यावरण :

महात्मा गौतम बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। जिनका जन्म लगभग 563 ईसवी पूर्व में नेपाल के लुंबिनी नगर में हुआ था। महात्मा बुद्ध के महत्वपूर्ण उपदेशों में शमथ और विपश्यना कर्म के कारणों के निर्धारण, मध्य मार्ग, अहिंसा, करुणा, मैत्री, मुदिता और उपेक्षा का आदान–प्रदान शामिल है। महात्मा बुद्ध पर्यावरण के प्रति चेतना रखते थे। उनके जीवन में प्राकृतिक घटनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पीपल का पेड़ जो आज भी पूजनीय है इनको ज्ञान की प्राप्ति इसी पेड़ के नीचे हुई, जिसे बोधिवृक्ष कहा गया है।[14] प्रसिद्ध इतिहासकार भरतसिंह उपाध्याय अपनी पुस्तक *'बुद्धकालीन भारतीय भूगोल'* में महात्मा बुद्ध को पर्यावरण से जोड़ते हुए बताते हैं कि भगवान बुद्ध बुद्धत्व प्राप्त कर अपनी प्रथम यात्रा के अवसर पर दो माह यहां रहकर कुछ समय के लिए वैशाली चले गए थे। जहां गंगा नदी की पार करने का उल्लेख है। बुद्धचरित में भी वर्णन मिलता है कि राजकुमार सिद्धार्थ गंगा को पार कर राजगृह पहुंचे थे।

महायान शाखा में पर्यावरण :

अध्यात्मिक प्रगति का साधन होने के कारण मार्ग एवं यान के रूप में धर्म की कल्पना प्राचीन है। हीनयान के उपायमात्र होने के कारण यह बुद्धयान अथवा बौद्धिसत्यायान ही एकमात्र वास्तिविक यान अथवा एकयान है। इस यान में आकाश के समान अनन्त सतयों के लिए अवकाश है अतएव इसे महायान कहते है।[15] महायान शब्द का सबसे पहले प्रयोग सर्वोत्कृष्ट मत ज्ञान को वर्णीत्त करने के लिए किया गया था। अश्वघोष, महायान बौद्ध धर्म

10डी० पी० अग्रवाल, मैन एण्ड इन्वायनेंट इन इण्डिया यू द एजिज, बुक्स एण्ड बुक्स, नई दिल्ली, 1992, पृ०118
11रामशरण, शर्मा, भारत का प्राचीन इतिहास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, इंग्लैंड, 2018, पृ० 44–45
12संयुक्त निकाय, भाग–1, पृ० 166
13डब्ल्यू बुल्तजर,एनवायरमेंट एन इकोलाजिकल अप्रोच दूप्रीहिस्ट्री, पृ० 122
14अंगुतर निकाय, भाग–2, पृ० 104
15अष्टसहस्रत्रिका, यथाकाशो अप्रेयजाणानंरमेवानां सत्यानामवकाशः एवमेव भगवत्रस्मिन् याने पुनश्च द०–चुत्रालंकार, प्रथमाधिकार, पृ०–24

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
Impact Factor : 7.665
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

के प्रथम व्याख्याता के रूप मे हमे विदित है। आरंभ में बुद्ध यद्यपि अन्य अर्हतों की अपेक्षा श्रेष्ठ समझे जाते थे। उनका जन्म उनके लक्षण, मार्गदर्शन, जन्म के पूर्व तुषित लोक में निवास उनकी मृत्यु सभी अद्भुत थे। बुद्ध के निर्वाण को महाशून्य मानते थे तथापि उनके लिए बुद्ध त्राता नहीं थे जैसे ईसाइयों के लिए इसामसीह त्राता है। इन्हीं कारणों से महायान की शाखा की उत्पत्ति हुई।[16]

इतिहासकार नलिनाक्ष दत्त अपनी पुस्तक *'आस्पेक्ट्स ऑफ महायान बुद्धिज्म एंड इट्स रिलेशन टू हीनयान'* में बताते हैं कि महायान के अंश हीनयान में ही विद्यमान थे। महायान बौद्ध संघ के भीतर की प्रवृत्तियों से स्वाभाविक विकास का ही परिणाम है।[17] महायानी आचार्य (अश्वघोष, नागार्जुन, असंग) स्थविरवादियों की तरह अपने साहित्य को मूल बुद्धवचन कहते है। *'अस्टसहस्र प्रज्ञापारमिता'* महायान सूत्रों में प्राचीनतम ग्रन्थ है इसका लोकरक्षक ने 148 ईसवी में अनुवाद किया था। इसी प्रकार अनेक देशों (चीन, जापान, इंडोनेशिया, श्रीलंका अन्य) स्थानों पर बौद्ध धर्म प्रचुर मात्रा में अपना वैभव प्रसारित कर रहा था।

महायान सूत्रों में पर्यावरण :

महायान सुत्रो के अनुसार तथागत ने हीनयान का उपदेश पाँच परिजको के समक्ष सारनाथ के प्रसिद्ध धर्मचक्रप्रर्वतन के द्वारा किया था किन्तु महायान का उपदेश उन्होने राजग्रह के गृधकुट पर्वत परबौद्धिसत्वों कि विपुल और विलक्षण सभा में किया।[18] नेवार तथा तिब्बती परम्परा के अनुसार मुख्य महायान सुत्र 9 है जो कि *सन्दर्भपुण्डरीक, ललितविस्तर, लंकावतारससूत्र, सुवर्णप्रकाश, गण्डव्युह तथागतगुहक, समाधिराज, दशभुमिश्वर एवं अस्टसहस्र प्रज्ञापारमिता सुत्र*[19] इन्हे *'वैपुल्य सुत्र'* भी कहते है जो महायान सूत्रों की सामान्य संज्ञा है। ये ग्रन्थ एक सम्प्रदाय के नहीं है और न एक समय की ही रचनाएँ है। इनमे महायान के सिंद्धान्तों का प्रतिपादन है।

'संदर्भपुण्डरीक' अनुवादक राममोहन दास से तात्पर्य श्वेत कमल से है जिसके समय रूप में अर्थ बुद्ध द्वारा निर्मित सदमार्ग है जो कमल के समान सुन्दर, पवित्र तथा निर्लिप्त है। महायान के नववैपुल्य सूत्रों में *सद्धर्भपुण्डरीक सूत्र* एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है। *संद्धर्भपुण्डरीक* ग्रन्थ के अन्तर्गत भौगालिक रूप से इसमें प्रतिविम्वित द्वीप, पर्वत, वन–कन्दरा, नदी, नगर,खान–पान, रहन–सहन, जडी–बूटियों, पेड़–पौधों इत्यादि का विस्तृत रूप से वर्णन देखन को मिलता है।

सुवर्णप्रभास–सूत्र' अनुवादक सत्यदेव कौशिक यह ग्रन्थ महायान शाखा का महत्वपूर्ण सूत्र है। एकादश परिवर्त में वर्णित है कि दृढ़ा नामक पृथ्वी देवी भगवान के सम्मुख उपस्थित हुई और कहा कि धर्मभाषक के लिए जो उपवेशन–पीठ है वह यथासम्भव सुखप्रदायक होगा। इस पर तथागत उसको प्राणीजगत के प्रति जिनमे वन, नदियों, पर्वत, औषधियों, प्राणि जगत व धरा पर विराजमान सभी वस्तुओं के प्रति सदा दयावान रहने की प्रार्थना करते हैं। अष्टादश परिवर्त में जलवाहन द्वारा मत्स्यों को बौद्धधर्म में प्रवेश कराने की चर्चा है।

'लंकावतारसूत्र',जिसका अनुवाद डी० टी० सूजूकि द्वारा किया गया है यह महायान शाखा का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है इसमें महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। महात्मा बुद्ध के धम्म दर्शन तथा उनकी शिक्षाएं आदि इस ग्रन्थ में मिलती है। इसमें पर्यावरण की विस्तृत व्याख्या तो नहीं मिलती है लेकिन अनेक स्थानों पर पर्यावरण से संबंधित वर्णन मिलता है।

'गण्डव्यूहसूत्र' परशुराम शर्मा द्वारा अनुवादित गण्डव्यूहसूत्र महायान ग्रन्थ है जो नेपाली बौद्ध धर्म के नौ धर्मों या आगमी में से एक है और इस तरह यह दुनिया भर में महायान बौद्धों के बीच एक आयतिधक सम्मलित कार्य प्रस्तुत करता है। *गण्डव्यूहसूत्र* के प्रथम सर्ग निदानपरिवर्त (पृ०–7–9) में महात्मा बुद्धसे मिलने के लिए अनेक दिशाओं से परिवारों के साथ बोद्धिसत्व 'तथागत' से मिलने आते हैं तथा उपहार भेंट स्वरूप लाते हैं जिनका

16आचार्य नरेन्द्रदेव, बौद्ध धर्म दर्शन, गोतीलाल, बनारसीदास प्राइवेट लिमिटेड, पटना, 1956, पृ०–129
17नलिनाक्ष दत्त, आस्पेक्ट्स ऑफ महायान बुद्धिज्म एंड इट्स रिलेशन टू हीनयान, तुजेक एण्ड कंपनी, लन्दन् 1930, पृष्ठ–323
18यथा, सद्धर्मपुण्डरीक, पृ०–44–45, 52–53
धर्मचक्र प्रतेंसि लोके अप्रतिपूदगल।
वाराणस्यां महावीर स्कन्धामुदयं ध्ययम् ।।
प्रथम प्रवर्तितं तत्र दिवीयनिह नायका
19त्रिपाठी, बौद्ध दर्शन प्रस्थान, सारनाथ, वाराणसी, 1997, पृ०–273

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
Impact Factor : 7.665
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

उनके क्षेत्र में पर्यावरण सम्बन्ध का पता बलता है तथा पर्यावरण के सम्बन्ध में महासागरों, क्षेत्रों, विभिन्न वस्त्रों, कमल, शेर, दिशाओं, नागी, धातुओं, रत्नों, रंगों, जल के रंगों, ऋतुओं, 15 फूलो, पर्वतों आदि का वर्णन मिलता है।

'ललितविस्तार' जिसका अनुवाद शान्तिभिक्षु शास्त्री द्वारा किया गया है इस बौद्ध ग्रन्थ के अन्तर्गत तथागत के गर्भावास से लेकर धर्मचक्र प्रवर्तन तक का इतिहास ललित शैली में वर्णित है जो अपेक्षाकृत महायान धर्म की मान्यता पर आधारित है। इस ग्रन्थ के अन्तर्गत पर्यावरण सम्बधित वर्णन मिलता है जिसमें फल–फूलों, उपवन, वृक्ष झाड़ियों, पर्वत–नदियों, तालाबों, पशु–पक्षियों (नाग कन्याएं, मोर पंख, हंस) आदि पर्यावरण सम्बंधित जानकारी मिलती है।

'ललितविस्तार' (दार्शनिक और सांस्कृतिक सर्वेक्षण) की अनुवादक श्रीमती शारदा गांधी पर्यावरण को दर्शाते हुए लिखती है कि यह ग्रन्थ महायान बौद्ध सम्प्रदाय में महावस्तु की शैली पर लिखा गया है जिसमें तथागत बोद्धिसत्व के बुद्धत्व प्राति के लिए अवतरित भव की लीला का वर्णन किया है। इसमें नगरों, जनपदों, यरत्र–आभूषणों, वेशभूषा, व्यवसाय उद्योग–धन्धे, ग्रामीण जीवन, कृषि (फसलें, सिंचाई) वन, पर्वत (ऋतु–मल्लिक परिवर्त में अष्टांग एवं गन्धमादन पर्वत की चर्चा प्राप्त है), ऋतुएं, खान–पान, औषधियां आदि पर्यावरण सम्बन्धित वर्णन मिलता है।

'दशभूमिश्वर' महायान सूत्र का प्रमुख ग्रन्थसूत्र है जिसके अन्तर्गत निर्वाण प्रति के लिए इन का सौपान की तरह उल्लेख है जिसमें एक के पश्चात दूसरी भूमि में प्रवेश करता है। इस की एक भूमि सुदुर्जया में प्राणियों के प्रति दयावान रहने का उपदेश दिया गया है।

'अष्टसहस्र प्रज्ञापारमिता' अनुवादक माल लिर्नाट (दिल्ली, 2005) पर्यावरण दृष्टि से यह सूत्र भौगोलिक स्थिति के आधार पर प्रकाश डालता है जहां नगरों, महाजनपदों व अनेक स्थलों से आये विद्वानों व बौद्ध अनुयायी जिनका वर्णन उनके भौगोलिक रूप से मिलता है। इसमें प्रयुक्त विविध पदार्थों व जड़ी बूटियों के साथ, सुगंधित फूलों आदि का विवरण प्राप्त होता है जो पर्यावरण दृष्टि से मूल्यवान है।

निष्कर्ष :

पर्यावरण इतिहास का अध्ययन न केवल जीव विज्ञान, परिस्थितिक विज्ञान की उप–शाखाओं में लगे वैज्ञानिकों तथा सीमित है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक नया प्रतिमान स्थापित करने के लिए इतिहासकारों की सक्रिय तथा स्वतंत्र भूमिका की मांग भी करता है। अतः कहा जा सकता है कि इतिहास को नए दृष्टिकोण से देखने की निरन्तर आवश्यकता है, ऐसा ही एक नवीन दृष्टिकोण पर्यावरणीय इतिहास प्रदान करता है। बौद्ध महायान परंपरा में प्रकृति और मानव के बीच का सम्बन्ध गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक आधार पर टिका है, जो पर्यावरणीय चेतना और संरक्षण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। महायान बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ, विशेष रूप से करुणा, परस्पर–निर्भरता (प्रतीत्यसमुत्पाद), और बोधिसत्व आदर्श, प्रकृति को न केवल एक संसाधन के रूप में, बल्कि एक जीवंत और परस्पर जुड़े हुए समग्र तंत्र के रूप में देखती हैं। इस परम्परा में प्रकृति और मानव के बीच का तादात्म्य पर्यावरणीय नैतिकता को बढ़ावा देता है, जो आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के समाधान में प्रासंगिक है। महायान दर्शन की अवधारणाएँ, जैसे शून्यता और सभी प्राणियों के प्रति करुणा, मानव को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व की दिशा में प्रेरित करती हैं। यह शोध–पत्र दर्शाता है कि महायान बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ न केवल पर्यावरणीय संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिए एक ठोस नैतिक ढांचा भी प्रदान करती हैं। इस प्रकार, महायान परम्परा आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में एक महत्वपूर्ण वैचारिक और व्यावहारिक योगदान दे सकती है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
Impact Factor : 7.665
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

अन्य सहायकग्रन्थ :

- डी० टी० सुजुकि, आऊटलाइन ऑफ महायान बुद्धिज्म, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो, लन्दन, 1907
- रामनारायण दत्त शास्त्री, अग्निपुराण, हिन्दी अनुवाद, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1969
- मदन मोहनसिंह, बुद्धकालीन समाज और धर्म, विहार हिन्दी ग्रन्ध अकादमी, पटना, 1972
- शास्त्री, द ऐतरेय आरण्यक एक अध्ययन, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1981
- विद्यालंकार, सरोज दीक्षा, ऐतरेय एवं तैत्तरीय ब्राह्मणों का निर्वचन, बाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1981
- आर०एस० सिंह, संस्कृत काव्य में विशिष्ट वनस्पतियों, सर्वोदय प्रकाशक गोलघर वाराणसी, 1984
- गंगा प्रसादउपाध्याय, शतपथ ब्राहाण, (हिन्दी अनुवाद), गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली, 1988
- शर्मा, रामशरण, प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति और समाजिक संरचनाए राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
- तारकनाथ, गोपथ ब्राह्मण : ए क्रिटिकल स्टडी, संस्कृत पुस्तक भंडार, कलकत्ता, 1994
- रमाशंकर त्रिपाठी, बौद्ध दर्शन प्रस्थान, सारनाथ वाराणसी, 1997
- जे० सीताराम, महायान बुद्धिज्म इन आन्ध्रप्रदेश, इस्ट बुक लिंकर्स, दिल्ली. 2005
- तुलसीदासशर्मा, महायान बौद्ध धर्म की रूपरेखा, डी० टी० सूजूकी के आऊटलाइन ऑफ महायान बुद्धिज्म का हिन्दी रूपांतरण, इस्टर्न बुक्स लिंकर्स, दिल्ली, 2007
- इरफानहबीब, मनुष्य और पर्यावरण भारत का पारिस्थितिक इतिहास राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- सविन्द्रसिंह, पर्यावरण भूगोल का स्वरूप, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2020

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved